हिंदी साहित्य में दलित चेतना: संघर्ष, अस्मिता और सामाजिक परिवर्तन

पृथ्वी राज, विधार्थी, हिंदी विभाग, महाराजा गंगा सिंह विशवविद्यालय, बीकानेर

सारांश

हिंदी साहित्य में दलित चेतना सामाजिक असमानता, जातिगत भेदभाव और शोषण के विरुद्ध संघर्ष की सशक्त अभिव्यक्ति है। दलित साहित्य ने उन अनुभवों और सामाजिक यथार्थ को स्वर दिया है, जिन्हें लंबे समय तक मुख्यधारा के साहित्य में अपेक्षित स्थान नहीं मिला। दलित लेखन में सामाजिक बहिष्कार, जातिगत उत्पीड़न, सम्मान, अधिकार, अस्मिता और समानता जैसे प्रश्न प्रमुखता से उभरते हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य हिंदी साहित्य में दलित चेतना के विकास, उसके प्रमुख सरोकारों तथा सामाजिक परिवर्तन में उसकी भूमिका का विश्लेषण करना है। कविता, कहानी, उपन्यास और आत्मकथा जैसी साहित्यिक विधाओं के माध्यम से दलित रचनाकारों ने अपने जीवनानुभवों को अभिव्यक्त करते हुए सामाजिक व्यवस्था की विसंगतियों पर प्रश्न उठाए हैं। दलित साहित्य केवल पीड़ा और संघर्ष का दस्तावेज नहीं है, बल्कि आत्मसम्मान, अधिकार और सामाजिक न्याय की चेतना का भी माध्यम है। यह अध्ययन निष्कर्षतः रेखांकित करता है कि हिंदी दलित साहित्य ने साहित्यिक विमर्श को व्यापक बनाते हुए सामाजिक समानता और मानवीय गरिमा के प्रश्नों को केंद्र में स्थापित किया है।

मुख्य शब्द : दलित चेतना, हिंदी साहित्य, दलित साहित्य, अस्मिता, सामाजिक न्याय, जाति व्यवस्था, सामाजिक परिवर्तन